Request to look into the corrupt practices of the cooperative societies in Maharashtra

श्री सय्यद ईमत्याज़ जलील (औरंगाबाद): सभापति महोदय, हर रोज देश भर में लाखों डिपॉजिटर्स के करोड़ों रुपये कैसे लूटे जा रहे हैं, इसका उदाहरण मैं महाराष्ट्र के कुछ को-ऑपरेटिव सोसाइटीज़ के बारे में देकर बताना चाहता हूं, जो लोगों के कम से कम 2 हजार करोड़ रुपये के डिपॉजिट्स को लेकर फरार हो गईं। आदर्श नागरी पतसंस्था में 62 हजार डिपॉजिटर्स हैं। रुकमणि, यशस्वीनी और नैनोबा सोसाइटी में जो 80 परसेंट डिपॉजिटर्स हैं, वे एक्स आर्मीमैन हैं, जिन्होंने अपना पैसा इन को-ऑपरेटिव सोसाइटीज़ और बैंक्स के अंदर लगाया। देवलई महिला, मलकापुर अर्बन, अमरावती की अनुग्रह, मुम्बई की नागरी पतसंस्था, ऐसे कुल मिलाकर कम से कम 2000 करोड़ रुपये लिए गए हैं।

सभापति महोदय, न तो आरबीआई का इनके ऊपर कोई कंट्रोल है न को-ऑपरेटिव डिपार्टमेंट का। आदर्श नागरी पतसंस्था, औरंगाबाद मेरे चुनावी क्षेत्र के अंदर आती है। वहां 62 हजार डिपॉजिटर्स हैं। कुछ ऐसी महिलाएं हैं, जिनकी जिंदगी भर की कमाई दो लाख रुपये है। उन्होंने दो लाख रुपये सिर्फ इस वजह से उस संस्था के अंदर लगाये, क्योंकि वहां पर इंट्रेस्ट रेट ज्यादा दिया जाता है। यह लालच दिखा कर लोगों के पीएफ का पैसा लिया जाता है। अगर कोई रिटायर हो रहा है तो उसके रिटायरमेंट का पैसा लिया जाता है। वे इनिशियली तो उन्हें पैसे दे देते हैं, लेकिन बाद में फरार हो जाते हैं।

मैं सरकार से यह अनुरोध करना चाहूंगा कि आरबीआई को फौरन इस तरह की को-ऑपरेटिव सोसाइटीज़ के अंदर इंटरवीन करना चाहिए और को-ऑपरेटिव डिपार्टमेंट को सख्त निर्देश देना चाहिए कि छ: महीने के अंदर उनका पैसा वापस मिलना चाहिए।